* अरविन्द के अनुसार "सृष्टि सत का अज्ञान में प्रविष्टि होना" है।
* विकास प्रक्रिया जो सृष्टि की क्रमिक विकास की प्रक्रिया है, जिसका प्रारम्भिक बिन्दु 'पूर्णज्ञान-शून्यता' है, तथा उसकी परिणति 'पूर्णज्ञान' है। ये दोनों दो छोर है तथा मध्य में अज्ञान (Ignorance) का क्षेत्र है।
* श्री अरविन्द के अनुसार विकास प्रक्रिया अब तक जड़तत्व (Matter), प्राणतत्व (Life) मन (Psyche) से होती हुई मानस (Mind) के स्तर तक पहुँच चुकी है। प्राण जड़तत्व से विकसित होते हैं अतः जड़ से टूटा हुआ नहीं है। मानस को उच्चतर अतिमानस तक पहुँचने की प्रतीक्षा है।

* अस्तित्व के चार सिद्धांत-
(1) परात्म-मूलक सिद्धांत (The Other Cosmic theory)
(2) ब्रह्माण्डमूलक अथवा इहलौकिक सिद्धांत (The cosmic or the terrestrial)
(3) पारलौकिक सिद्धांत (The supraterrestrial or the other worldly)
(4) पूर्ण अद्वैतवादी अथवा सांश्लेषिक सिद्धांत (The Integral or the Synthetic)
- अरविन्द - शंकर, बौद्ध, रामानुज एवं सभी को तत्वमीमांसीय दृष्टि से प्रथम श्रेणी में रखते हैं। क्योंकि ये सभी सत को पूर्णतया परात्म मूलक मानते हैं। अरविन्द इस मत को एकांगी मानते हैं।
- द्वितीय सिद्धांत ब्राह्मण के सत को वास्तविक मानते हैं यह सिद्धांत सिर्फ जगत को ही सत मानता है। चार्वाक भी इसी श्रेणी में आते हैं। अरविन्द इसे भी एकांगी मानते हैं।
- तृतीय मत पारलौकिक सिद्धांत केवल परात्मतत्वों की ही यथार्थता स्वीकारते हैं। अर्थात यह सिद्धांत दोनों मत का समन्वय करता है लौकिक जगत तथा इसके परे की सत्ता दोनों को सत्य मानता है। अरविन्द इसकी भी आलोचना करते हुए कहते हैं कि इस जगत में ही "दिव्य जीवन" सम्भव है।
- पूर्ण अद्वैतवादी अथवा सांश्लेषिक सिद्धांत (Integral) अरविन्द का तत्वमीमांसीय सिद्धांत इसी श्रेणी में आता है।

- मानव के स्वरूप के संबंध में श्री अरविन्द के अनुसार तीन पक्ष हैं – (1) एक उसका बाह्य पक्ष, (2) दूसरा उसका आन्तरिक पक्ष है या चैतन्य पुरुष है तथा (3) तीसरा जीवात्मा है। प्रथम पक्ष में हमारा भौतिक स्वरूप स्पष्ट होता है, दूसरे और तीसरे पक्ष में आध्यात्मिक का स्वरूप स्पष्ट होता है तथा तीसरा पक्ष मानव का सत् पक्ष है जिसकी वास्तविकता है जिसकी पूर्ण अभिव्यक्ति ही मानव अस्तित्व की परिणति है।

* 'अज्ञान' भारतीय दर्शन में अज्ञान को बंधन का कारण और ज्ञान को बंधन से मुक्ति माना गया है। अर्थात् अज्ञान ज्ञान का विपरीतार्थक है। पर अरविन्द ऐसा नहीं मानते। उनके अनुसार अज्ञान तो है भले ही वह अपूर्ण अथवा आंशिक है। ऋग्वेद में भी ज्ञान तथा अज्ञान का भेद बताया गया है। ज्ञान को सत्य की चेतन अनुभूति के रूप में कल्पित किया गया है तथा अज्ञान को सत्य की अचेतनता समझा गया है। अरविन्द के अनुसार अज्ञान 'ज्ञानशून्यता (Nescience) नहीं है।

* अरविन्द अज्ञान के सात (7) स्वरूप बतलाते हैं –

1. प्राथमिक अथवा आद्य अज्ञान (Original Ignorance)
2. ब्रह्माण्डमूलक अज्ञान (Cosmic Ignorance)
3. अहंकेन्द्रित अज्ञान (Egoistic Ignorance)
4. सामयिक अज्ञान (The Temporal Ignorance)
5. मनोवैज्ञानिक अज्ञान (The Psychological Ignorance)
6. रचनात्मक अज्ञान (Constitutional Ignorance)
7. व्यावहारिक अज्ञान (The Practical Ignorance)

* अतिमानस (The Supermind) –

- अरविन्द अतिमानस को 'परम सत्य चेतना' (Supreme Truth Consciousness) कहते हैं।
- अतिमानस को सृजन (Creation) या सर्जनात्मक भाव (Creative Idea) तथा कभी कभी सद्भाव (Real Idea) कहा गया है।

* श्री अरविन्द मानस से अतिमानस तक बढ़ने के क्रम में चार कड़ियों का वर्णन किये हैं जो क्रमों के माध्यम से ही निम्न से उच्च की ओर बढ़ता है। जो है: –

1. उच्चतर मानस (Higher Mind)
2. प्रदीप्त मानस (Illumined Mind)
3. अन्तर्दृष्टि - (Intuition)
4. व्यापक मानस (Over Mind)

} मानस से अतिमानस तक पहुँचने के सीढ़ि

* अतिमानस की त्रिविध पदस्थिति (The Triple Status of the Supermind)

- श्री अरविन्द के अनुसार विकास तथा अवतरण (Evolution and Involution) की प्रक्रियाओं के विवरण में विकास प्रक्रिया जड़तत्व से मानस के स्तर तक पहुँची है, तथा अतिमानस के स्तर में प्रवेश करने के लिये तत्पर है तथा विकास उच्चतर रूपों का अवतरण जड़तत्व, प्राणतत्व मन तथा मानस आदि में हो चुका है। अतिमानस की ओर बढ़ने का इन्तजार है।
- अतिमानस की स्थिति सम्बन्धी प्रथम स्थिति 'एकरूपता' की स्थिति है, इसे 'शुद्ध प्रत्ययन' की स्थिति कही जा सकती है। प्रथम स्थिति में अतिमानस को उन 'रूपों' की चेतना है जो जगत में प्रकट होने वाले हैं।
- दूसरी स्थिति (Poise) में सृष्टि प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। अतिमानस को जिन रूपों की चेतना है, वे जगत में व्यक्त होते हैं। अतिमानस 'एक' को अनेक रूपों में व्यक्त करते हैं, तथा उन अनेकता में एकता की भी चेतना रखते हैं। इस स्थिति में अतिमानस चेतना 'आत्म-रूपों' में केन्द्रीत हो जाती है, और यह केन्द्रीय नहीं 'जीवात्म-रूप' है।
- तीसरी स्थिति में अतिमानस जगत में 'अवतरित' हो जाते हैं। अनेकता की अभिव्यक्तियों में अवतरित हो जाते हैं। अतः प्रथम स्थिति 'कारण- अवस्था' है दूसरी स्थिति उस प्रथम स्थिति का परिणाम है यह 'कार्य- अवस्था' है तथा तीसरी स्थिति 'पूर्णरूपेण अवतरण' कहा जा सकता है।

* त्रिविध रूपान्तरण (The Triple Transformation)
श्री अरविन्द का कहना है कि उच्चतर क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिये 'तीन' प्रकार के रूपान्तरणों का होना आवश्यक है -